

## सारंगढ़ तहसील में भूमि उपयोग: एक भौगोलिक अध्ययन

केदार नाथ नायक<sup>1</sup>, डॉ. एस. आर. कमलेश<sup>2</sup>

<sup>1</sup> शोधार्थी, भूगोल विभाग, पं. सुन्दर लाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

<sup>2</sup> प्राचार्य एवं शोध निर्देशक, भूगोल विभाग, शास. बिलासा कन्या पी.जी. महाविद्यालय बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

### सारांश

भूमि उपयोग भौगोलिक अध्ययन का एक महत्वपूर्ण मुख्य पहलू है। इस शब्द का व्यापक रूप में व्यवहार सर्वप्रथम ब्रिटेन के प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता प्रो. डडले स्टैम्प ने किया था। हमारी आर्थिक व्यवस्था भूमि संसाधनों पर आधारित है। अतः प्रत्येक भूखण्ड की उत्पादन क्षमता अथवा उसकी समुचित उपयोगिता का ज्ञान होना आवश्यक है। जनसंख्या की वृद्धि के साथ-साथ भूमि संसाधनों पर दबाव प्रतिदिन बढ़ता ही चला जा रहा है। हमें यह ध्यान रखना है कि भूमि संसाधनों का दोहन उस सीमा तक नहीं पहुंचना चाहिये जहां पारिस्थितिक असंतुलन हो जाये।

**मूलशब्द:** भूमि उपयोग, भूमि संसाधन, भूमि उपयोग प्रतिरूप, धरातलीय संरचना, मिट्टी, फसलों का वितरण

मानव अपने विभिन्न प्रयोजनों के लिए भूमि का उपयोग अनेक रूपों में सदियों से करते आ रहा है तथा भूमि आदिकाल से मानवीय सभ्यता व संस्कृति तथा मानव जीवन का आधार रहा है। प्रादेशिक नियोजन एवं विकास में भूमि उपयोग मानचित्रों को महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है। भूमि उपयोग भौगोलिक अध्ययन का एक महत्वपूर्ण मुख्य पहलू है। इस शब्द का व्यापक रूप में व्यवहार सर्वप्रथम ब्रिटेन के प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता प्रो. डडले स्टैम्प ने किया था। हमारी आर्थिक व्यवस्था भूमि संसाधनों पर आधारित है। अतः प्रत्येक भूखण्ड की उत्पादन क्षमता अथवा उसकी समुचित उपयोगिता का ज्ञान होना आवश्यक है। जनसंख्या की वृद्धि के साथ-साथ भूमि संसाधनों पर दबाव प्रतिदिन बढ़ता ही चला जा रहा है। हमें यह ध्यान रखना है कि भूमि संसाधनों का दोहन उस सीमा तक नहीं पहुंचना चाहिये जहां पारिस्थितिक असंतुलन हो जाये। सारंगढ़ तहसील जैसे कृषि प्रधान क्षेत्र में कृषि भूमि उपयोग का आँकलन और भी आवश्यक है।

अस्तु प्रस्तुत भोध प्रपत्र का उद्देश्य "सारंगढ़ तहसील में भूमि उपयोग: एक भौगोलिक अध्ययन" से संबंधित अध्ययन है।

### अध्ययन क्षेत्र एवं शोध प्रविधि

सारंगढ़ तहसील छत्तीसगढ़ के सुदूर पूर्व में बिलासपुर संभाग के रायगढ़ जिले के अन्तर्गत स्थित है जिसका भौगोलिक क्षेत्रफल 1632.46 वर्ग कि.मी. है। जिले के दक्षिण में इसका भौगोलिक विस्तार 21°-20' उत्तर से 21°-35' उत्तरी अक्षांश से 82°-45' पूर्व से 83°-25' पूर्वी देशान्तर के मध्य है। इसकी उत्तरी सीमा पर जांजगीर का डभरा तथा रायगढ़ का पुसौर तथा पूर्व में महासमुंद जिले का सरायपाली एवं दक्षिण में बलौदाबाजार का कसडोल तहसील है।

2001 की जनगणना अनुसार प्रशासनिक दृष्टि से सारंगढ़ तहसील 2 विकासखण्ड, 5 पुलिस स्टेशन, 4 राजस्व निरीक्षण मण्डल, 162 ग्राम पंचायत, 536 गांव और 2 नगर पालिका में विभाजित है तथा सारंगढ़ नगर ही तहसील मुख्यालय है। अध्ययन सुविधा के लिए तहसील के दोनो विकासखण्डों के 52 पटवारी हल्कों को 25 संयुक्त पटवारी हल्के में विभाजित किया गया है।

सारंगढ़ तहसील की जलवायु विशाल मानसून व्यवस्था का अंग है। समग्र रूप से यहां की मिट्टी लाल-पीली मिट्टी के अन्तर्गत आती है। सारंगढ़ तहसील का दक्षिणी एवं पूर्वी भाग सारंगढ़ वन

परिक्षेत्र में फैला है तथा गोमर्डा अभ्यारण 277.82 वर्ग कि.मी. विस्तृत है। जनगणना 2001 के अनुसार यहां की जनसंख्या 3,29,567 व्यक्ति है। जनसंख्या का औसत घनत्व 138 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है। सारंगढ़ तहसील की जनसंख्या दशाब्दिक वृद्धि दर 18.05 प्रतिशत (1991-2001) तथा लिंगानुपात 1021 है। तहसील का कार्यशील जनसंख्या का औसत अनुपात 46.67 प्रतिशत है। तहसील में परिवहन का प्रमुख साधन सड़क मार्ग ही है।

प्रस्तुत अध्ययन हेतु अध्ययन क्षेत्र सारंगढ़ तहसील के विकासखण्डों, राजस्व निरीक्षक मण्डलों और पटवारी हल्के को आधार माना गया है, जिनके आंकड़े पटवारी के जमाबन्दी एवं गोशवारा के साथ-साथ अन्य संबंधित अभिलेखों, राजस्व वृत्त प्रतिवेदन तथा अध्ययन से संबंधित आंकड़े 10 प्रतिदर्शी गांवों के प्रत्यक्ष पारिवारिक सर्वेक्षण से आंकड़े प्राप्त कर भूमि उपयोग, कृषि जोत का आकार, कृषि विकास का स्तर तथा कृषि से संबंधित आंकड़ों का संकलन तीन वर्षों के (2002 से 2005) विकास प्रतिरूप के पिछड़े दस वर्षों के आंकड़ों के आधार पर अध्ययन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र रायगढ़ जिले के सारंगढ़ तहसील का चयन तहसील के 9 पटवारी हल्कों को आधार मानकर प्रतिचयित 10 ग्रामों का सर्वेक्षण प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़े संकलित किये गये हैं तथा द्वितीयक समंक हेतु विभिन्न शासकीय एवं अशासकीय कार्यालयों, जिला सांख्यिकी कार्यालय, मिट्टी परीक्षण शाला, क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केन्द्र, संसद रिपोर्ट, जिला गझेटियर, भूअभिलेख एवं बन्दोबस्त द्वारा प्रकाशित वार्षिक ऋतु एवं फसल प्रतिवेदन एवं कृषि संगणना आदि समंक संकलन कर अध्ययन किया गया है। अध्ययन के विधियों में दर, प्रतिशत, औसत, घनत्व आदि सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग कर विश्लेषण किया गया है।

### भूमि उपयोग

भूमि की क्षमता का मूल्यांकन उपयोगों के संदर्भ में किया जाता है। जिस कार्य के लिए भूमि का प्रयोग किया जाता है अथवा किया जाना है, उसे भूमि उपयोग कहते हैं। फ्रांस के अनुसार— "भूमि उपयोग भूमि की शोषण प्रक्रिया है। जिसमें भूमि का व्यावहारिक उपयोग किसी निश्चित उद्देश्य से किया जाता है।"

भूमि उपयोग की गहनता अथवा बहुभूमि प्रयोग हैं। भूमि उपयोग की गहनता से तात्पर्य यह है कि निराबोया गया क्षेत्र का कितना

अधिक पुनः उपयोग किया जाता है। कुल फसलों के क्षेत्रफल को निराबोया क्षेत्र के प्रतिशत के रूप में रखकर भूमि उपयोग की गहनता व्यक्त करने की एक विधि है। शस्य गहनता भी इसी से मिलती—जुलती संकल्पना है। एक कृषि वर्ष की अवधि में एक ही खेत से कितनी फसलें पैदा की जाती हैं, उन्हें बताने के लिए कृषि की गहनता शब्द का प्रयोग होता है। जैसे कि एक ही भूमि पर चावल की कृषि के साथ ही मछली पालन एवं केला उत्पादन आदि भूमि का बहुउपयोग है।

भूमि उपयोग का अध्ययन भूगोल वेत्ताओं के साथ—साथ अर्थशास्त्रियों एवं समाज शास्त्रियों के लिए भी सहायक सिद्ध होता है। भारत जैसे कृषि प्रधान देशों में भूमि का सर्वाधिक उपयोग कृषि कार्य के लिए होता है। लेकिन उद्योग प्रधान देशों में समस्त कृषि योग्य भूमि का अनुकूलतम उपयोग किया जाता है। भूमि उपयोग प्रतिरूप का कृषि उत्पादन, कृषि संबंधी आर्थिक समस्याएं एवं आर्थिक विकास के स्तर से घनिष्ठ संबंध होता है। भूमि उपयोग प्रतिरूप को उस क्षेत्र की प्राकृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक तत्व सर्वाधिक प्रभावि करते हैं। किसी भी क्षेत्र का भूमि उपयोग प्रतिरूप दो सीमाओं के अन्तर्गत नियंत्रित होते हैं— प्रथम बाह्य या निरपेक्ष परिस्थितियां जो प्रकृति द्वारा निर्धारित होती हैं। द्वितीय सापेक्ष परिस्थितियां, जो भूमि के वास्तविक तथा संभावित उपयोगों का निर्धारण करती हैं। भौतिक कारकों के अन्तर्गत धरातलीय संरचना, मिट्टियां, जलवायु एवं अपवाह तंत्र है। मानवीय कारक जैसे— सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक, औद्योगिक, एवं मानवीय पर्यावरण भूमि उपयोग को प्रभावित करने के साथ—साथ इनके सीमाओं को भी नियंत्रित करते हैं।

### भूमि उपयोग का वर्गीकरण

भूमि उपयोग वर्गीकरण का तात्पर्य भूमि के उस भाग से है, जो विभिन्न प्रयोजनों के लिए उपयोग में आता है। इस आधार पर भूमि को कई श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। भूमि उपयोग वर्गीकरण से उसके प्रादेशिक वितरण के प्रतिरूप भी उभरते हैं। कृषि प्रणाली, फसलों का वितरण, घास के मैदान तथा अन्य प्राकृतिक वनस्पति के प्रादेशिक वितरण का भी सही—सही ज्ञान होता है।

सारंगढ़ तहसील में भूमि उपयोग वर्गीकरण का अध्ययन निम्न बिन्दुओं के आधार पर किया गया है —

1. वन
2. कृषि के लिए अप्राप्त भूमि—  
(अ) गैर काश्तकारी काम में लायी गई भूमि।  
(ब) बंजर एवं कृषि अयोग्य भूमि।
3. अन्य अकृषि भूमि—  
(अ) स्थायी चारागाह एवं घास।  
(ब) विविध प्रकार के वृक्षों के झुण्ड एवं बाग।
4. पड़ती भूमि—  
(अ) पुरानी पड़ती  
(ब) चालू पड़ती (वर्तमान पड़ती)
5. निरा बोया गया क्षेत्र।
6. दुफसलीय क्षेत्र।

सारंगढ़ तहसील की भूमि उपयोग में जो लक्षण एवं विशेषताएं परिलक्षित होती हैं। जो मुख्य रूप से निम्नांकित हैं—

1. तहसील में वन के अन्तर्गत 2008—11 में प्रदर्शित क्षेत्रफल का 21.17% है। पिछले 10 वर्षों में वन क्षेत्र के अन्तर्गत की कमी आई। इस कमी का मुख्य कारण संरक्षित एवं आरक्षित

वन क्षेत्रों में वृद्धि होना है। इसके अतिरिक्त जनसंख्या में वृद्धि होने से वन क्षेत्र में अधिवास बनने लगे जिससे वन क्षेत्र में कमी आयी।

2. तहसील में कृषि के लिए अप्राप्त भूमि के अन्तर्गत गैरकाश्तकारी काम में लायी गई भूमि एवं बंजर व कृषि अयोग्य भूमि को सम्मिलित किया गया है। इसके अन्तर्गत कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 10.21% है। पिछले 10 वर्षों में है कृषि के लिए अप्राप्त भूमि का 17.69% है। ग्रामीण जनसंख्या में वृद्धि होने से अतिरिक्त जनसंख्या के लिए सबसे बड़ी समस्या आवास की होती है। आवास की समस्या को हल करने के लिए इन्होंने वन क्षेत्रों पर अतिक्रमण किया जिसके परिणाम स्वरूप कृषि के लिए अप्राप्त भूमि में वृद्धि हुआ है।
3. तहसील में अन्य अकृषि भूमि का कुल कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 10.83% है। भूमि उपयोग के इस वर्ग के अन्तर्गत स्थायी चारागाह व घास, विविध वृक्षीय फसलें व अमराई एवं कृषि योग्य भूमि को सम्मिलित किया जाता है। स्थायी चारागाह व घास एवं कृषि योग्य भूमि कुल प्रदर्शित भौगोलिक क्षेत्रफल का क्रमशः 8.51 एवं 2.32% है। त्रिवर्षीय औसत के आधार पर पिछले 10 वर्षों में 686 हेक्टेयर भूमि का ह्रास होने के कारण निराबोये गये क्षेत्र में वृद्धि हुआ है।
4. तहसील में पड़ती भूमि के अन्तर्गत पुरानी पड़ती एवं चालू पड़ती को शामिल किया गया है। पड़ती भूमि का तात्पर्य ऐसे भूमि से है जिस पर पहले कृषि कार्य किया जाता था लेकिन अस्थायी रूप से एक से पांच वर्षों के लिए कृषि उपयोग में नहीं लाया गया है। क्योंकि ऐसे भूमि में उर्वरा शक्ति की कमी होती है। 2008—11 में कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 3.24% है।
5. तहसील में सर्वाधिक भूमि निरा बोया गया क्षेत्र के अन्तर्गत है। इस प्रकार इन 10 वर्षों में हुआ जो कुल निराबोया गया क्षेत्र का 3.19% जो 0.34% की वृद्धि प्रदर्शित करती है। सिंचाई सुविधाओं में विकास एवं बढ़ती हुई जनसंख्या अपनी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वन भूमि एवं अन्यअकृषि भूमि को अपने अधिकार में ले लिया फलस्वरूप निराबोया क्षेत्र में वृद्धि हुई।
6. तहसील में कुल निराबोया गया क्षेत्र का 27.95% दुफसली है। पिछले 10 वर्षों में इसमें 26.01% की वृद्धि हुई। दुफसली क्षेत्र में वृद्धि होना कृषि विकास को स्पष्ट करता है। सिंचाई सुविधाओं में विकास एवं कृषकों की मनोवृत्ति में परिवर्तन आने के कारण दुफसली क्षेत्र में वृद्धि हुआ है।

### निष्कर्ष

भारत आर्थिक व्यवस्था भूमि संसाधनों पर आधारित है। अतः प्रत्येक भूखण्ड की उत्पादन क्षमता अथवा उसकी समुचित उपयोगिता का ज्ञान होना आवश्यक है। जनसंख्या की वृद्धि के साथ—साथ भूमि संसाधनों पर दबाव प्रतिदिन बढ़ता ही चला जा रहा है। हमें यह ध्यान रखना है कि भूमि संसाधनों का दोहन उस सीमा तक नहीं पहुंचना चाहिये जहां पारिस्थितिक असंतुलन हो जाये। भूमि उपयोग का अध्ययन भूगोल वेत्ताओं के साथ—साथ अर्थशास्त्रियों एवं समाज शास्त्रियों के लिए भी सहायक सिद्ध होता है। भारत जैसे कृषि प्रधान देशों में भूमि का सर्वाधिक उपयोग कृषि कार्य के लिए होता है। लेकिन उद्योग प्रधान देशों में समस्त कृषि योग्य भूमि का अनुकूलतम उपयोग किया जाता है। भूमि उपयोग प्रतिरूप का कृषि उत्पादन, कृषि संबंधी आर्थिक समस्याएं एवं आर्थिक विकास के स्तर से घनिष्ठ संबंध होता है।

**संदर्भ सूची**

1. श्रीवास्तव, पी. एन: जिला गजेटियर, रायगढ़ जिला, गजेटियर संचालनालय, संस्कृति विभाग म.प्र.भोपाल, पृ. 1-23।
2. महानिदेशक वेधशाला तथा भूभौतिकी, भारत सरकार, दिल्ली का प्रतिवेदन।
3. Govind Rajan S-V-: [Studies on soil of India] Vikash Pub- House Pvt- Ltd- New Delhi] & Gopal Rao H-C-P-141.
4. Detailed Soil Survey Report for Mand irrigation Project M-P- Govt- Report P-63
5. सिंह, रामबली एवं पाण्डेय श्रीकांत: "फरेन्दा तहसील में जनसंख्या घनत्व: एक भूवैज्ञानिक- कालिक विश्लेषण, उ. भा.भू.प., (1979) अंक-15, संख्या-2, पृ. 115-126.
6. कुमार, प्रमिला: शमध्यप्रदेश एक भौगोलिक अध्ययन, "म.प्र. हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल (1994).
7. जोशी, वाई. जी.: नर्मदा बेसिन का कृषि भूगोल, म.प्र. हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल (1972).
8. त्रिपाठी, के एवं चन्द्राकर पी.: "छत्तीसगढ़ का भूगोल, शारदा प्रकाशन बिलासपुर, (2001),
9. कमलेश, एस. आर.: "कृषि भूगोल: बिलासपुर संभाग में कृषि विकास का स्तर एक भौगोलिक अध्ययन, वसुंधरा प्रकाशन गोरखपुर (1996), पृ. 8-23.
10. Mandal] R-B- (1982): Land Utilization Theory and Practice] Concept Pub-New Delhi-
11. Singh] Jasbir (1974&75): An Agricultural Atlas of India: A Geographical
12. Analysis] Vishal Pub- Kurukshetra (Haryana) P- 101-
13. Mitra, M-S- (1980): 'Agricultural Geography of Chhattisgarh Basin' Sahitya Ratnalaya Kanpur, PP- 54-
14. Jain, C-K- (1988): 'Patterns of Agricultural Development in M-P., Geographical Analysis, Northern Book Centre, New Delhi, P- 62.
15. Govt- of India (1960): Co-Ordination of Agricultural Statistis in India, Ministry of Agriculture-
16. Shafi, M.C. (1960): Land Utilization in Estern U-P- University Press, Aligarh-
17. जोशी, यशवंत-गोविंद (1972): नर्मदा बेसिन का कृषि भूगोल म. प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।